IJAER/January-February 2013/Volume-2/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

अष्टावक्र गीताः एक संक्षिप्त विवरण

आशीष सेमवाल[1]ए डा0 डो0 एन0 सिंह[2]
[1]शोधार्थीए दर्शन शास्त्र विभागए सी0एम0ज0विश्वविद्यालयए रायभोइ,ए जोरबाटए मेघालय
[2]शोध निर्देशकए दर्शन शास्त्र विभागए सी0एम0ज0 विश्वविद्यालयए रायभोइए जोरबाटए मेघालय

महाकाव्य में अष्टावक्र के जीवन की कथा का वर्णन है। जिसका आधार बाल्मीकि रामायण का युद्धकाण्ड। महाभारत का वन पर्व अष्टावक्र गीता एवं भवभूति द्वारा रचित उत्तर रामचरितम् नाटक है। छान्दोग्य उपनिषद में वर्णित ऋषि उद्दालक के कहोल नामक एक शिष्य हैं। उद्दालक कहोल को अपनी पुत्री सुजाता विवाह में अर्पित करते हैं और नवविवाहित दम्पती एक जंगल के आश्रम में जीवन यापन प्रारम्भ करते हैं। कुछ वर्षों के उपरान्त सुजाता गर्भवती हो जाती है। गर्भस्थ बालक एक बार रात्रि में अपने पिता ऋषि कहोल से कहता है कि उच्चारण करते समय प्रत्येक वैदिक मन्त्र में आठ अशुद्धियाँ कर रहे हैं। क्रुद्ध कहोल बालक को आठ अंगों दोनों पैर, घुटने, हाथ और छाती एवं सिरद्ध से विकलांग होने का घोर शाप दे देते हैं।

इसी मध्य जंगल में अकाल पड जाता है और सुजाता अपने पति कहोल को कुछ धनार्जन करने के लिए मिथिला में राजा जनक के समीप भेजती है। जनक का बन्दी नामक एक दरबारी कहोल को शास्त्रार्थ में पराजित कर देता है और वरुणपाश के द्वारा ऋषि को जल में डुबा देता है। उद्दालक सुजाता को उसके पति की दुर्दशा से अवगत कराते हुए इस घटना को बालक से गुप्त रखने को कहते हैं।

उद्दालक सुजाता द्वारा प्रसूत शिशु का नाम अष्टावक्र रखते हैं। उसी समय उद्दालक के भी एक पुत्र का जन्म होता है जिसका नाम श्वेतकेतु रखा जाता है। अष्टावक्र और श्वेतकेतु भाइयों की तरह बडे होते हैं और उद्दालक से धर्म ग्रन्थों का अध्ययन करते हैं। अष्टावक्र उद्दालक को अपना पिता एवं श्वेतकेतु को अपना भाई समझता है। किन्तु दसवर्ष की आयु में अपने पिता के बन्दी के बन्धन में होने का ज्ञान होने पर वे अपने पिता को मुक्त कराने के लिए मिथिला जाने का निश्चय करते हैं। अष्टावक्र अपने मामा श्वेतकेतु के सहित मिथिला की यात्रा करते हैं और क्रमशः द्वारपाल राजा जनक और बन्दी को शास्त्रार्थ में हराकर अपने पिता कहोल को वरुणपाश से मुक्त कराते हैं।

घर लौटते समय मार्ग में महर्षि कहोल अष्टावक्र को समंगा नदी में स्नान कराते हैं और अपने तपोबल से उन्हें उनके शरीर की आठों विकलांगताओं से मुक्त करा देते हैं। अन्त में वशिष्ठ मुनि की प्रेरणा पर अष्टावक्र सीता एवं रामजी के राजदरबार में पधारते हैं और अयोध्या की राजसभा में सम्मानित किए जाने पर आनन्द का अनुभव

करते हैं।

अष्टावक्र गीता क आठों सगा को कथा
का संक्षिप्त विवरण– सम्भव–

ज्ञान को देवी माँ सरस्वती का आह्वान करन क पश्चात् कवि महाकाव्य क प्रतिपाद्य क रूप म अष्टावक्र का परिचय देते ह जो आगे चलकर विकलाग जना क पुरोधा एवं ध्वजावाहक बन। ऋषि उद्दालक अपनी पत्नी एव दस सहस्र शिष्या के साथ एक ग,रुकल म निवास करते हैं। ऋषि दम्पती क यहाँ सुजाता नाम को एक कन्या ह जो शिष्यों क साथ वदा का अध्ययन करती हुई बडो होती है। उद्दालक क कहोल नामक एक प्रसिद्ध शिष्य हैं। विद्या समाप्ति क उपरान्त उद्दालक कहाल को अपन उपयुक्त किसी बाह्मण कन्या से विवाह कर गृहस्थाश्रम म प्रवश करन का आदश I देत ह।कहाल स,जाता को अपनी जोवन संगिनी बनाने को इच्छ,क हैं किन्तु सकुचाते हैं कि गरु पुत्री से विवाह करना समोचीन होगा कि नहीं। उद्दालक कहाल को मनाभावना को समझ जाते हैं और प्रसन्नतापूवक अपनो पुत्री सुजाता कहाल को विवाह म प्रदान कर देते हैं। उद्दालक भविष्यवाणी करत हए कहते ह कि सुजाता एक ऐसे पुत्र को जन्म दगी जो आग चलकर विकलाग क लिए प्रेरणा स्रात को भूमि का निभाएगा। विवाह क पश्चातए नवदम्पती अपने आश्रम क लिए एक निजन जंगल का चयन करते ह जहाँ कहाल शिष्यों का विद्याध्ययन कराना प्रारम्भ कर देते हैं। स,जाता सूर्य भगवान को उपासना करती है और एक ऐसे पुत्र को अभिलाषा करती है जिसका जोवन विकलांगजना को समस्त समस्याओं हेतु समाधान प्रस्तुत कर। सूयदेव उसकी अभिलाषा स्वोकार करते ह। सर्ग का समापन सुजाता द्वारा गर्भधारण करन आर दम्पती द्वारा आनन्दित होने को घटनाओं क साथ होता है।

संक्रान्ति–

सर्ग क प्रथम २७ पद्यां एक चाशाई भाग म महाकवि क्रान्ति को सम्यक् अवधारणा संक्रान्तिश् का शंखनाद करते हए उसे व्याख्यायित करते हं। उनक अन,सार सम्यक् क्रान्ति रक्त बहान से नहीं अपितु विचारा क परिवतन से सभव है किन्त, लागों क लिए इस प्रकार को क्रान्ति कठिन ह क्योंकि उनका अहं उन्ह इसक लिए अनुमति प्रदान नहीं करता। इसक पश्चात कथाक्रम अगसर हाता है सुजाता क पुंस वन एवं सीमन्तान्नयन संस्कार सम्पन्न हा जाने के पश्चातए एक दिन कहोल आगामी दिन शिष्यों का पढान क लिए अपन ज्ञान की प्रवीणता हेतु देर रात्रि तक वदा का उच्चारण करत ह। श्रान्ति और चार दाषा भ्रम,प्रमाद, विप्रलिप्सा एव करणापाटव क कारण कहाल वेद उच्चारण करत समय आठ प्रकार को जटाए, रेखाएं मालाए शिखाए रथ, ध्वजा, दण्ड एव घन पाठ संबन्धी अशुद्धियाँ करना प्रारम्भ करते ह। सुजाता का गभस्थ शिशु कुछ समय ता इसक सम्बन्ध मं विचार करता रहता है आर फिर यह जान कर कि ऋषि प्रत्यक मन्त्र के उच्चारण मं आठ प्रकार की अशुद्धियाँ कर रहे ह क्षुब्ध हाकर अपने पिता स मन्त्रों का शुद्ध अभ्यास करने आर अध्यापन न करने को

कहता है। कहाल यह सुनकर चकित रह जाते हैं आर यह कहत हुए कि वह परम्परा क अनुसार ही उच्चारण कर रह ह आर विस्मृति जोव के लिए स्वाभाविक है गर्भस्थशिशु से शान्त रहन क लिए कहत हैं किन्तु शिशु प्रत्युत्तर देत हुए पिता से रुढिया का पुरातन शव फकन को कहता ह आर उनसे पुनः एक बार आर उद्दालक से वदों का अध्ययन करने की विनती करता है। कुपित कहाल शिशु को आठ वक्र टेढ़े अगा क साथ उत्पन्न होन का शाप द देते हैं। किन्तु तुरन्त इसके पश्चात् कहाल का पश्चात्ताप का अनुभव होता ह। परन्तु शिशु अष्टा वक्रशाप को सहर्ष स्वोकार करते हुए अपन पिता से इस सम्बन्ध म पश्चात्ताप न करन का अनुराध करता ह।

समस्या–

यह सग अपनी माता क उदर म स्थित शिशु अष्टावक्र क स्वगत कथन क माध्यम से उनको समस्या का वर्णन करता है। सग करुणरस वोर रस एवं आशावाद से परिपूर्ण है। प्रथम ३० पद्या म सार्वभौमिक एवं अत्यधिक सशक्त समस्या क लिए विभिन्न रूपक चित्रित किए गए हैं। भगवान पर अगाधविश्वास एव संकल्पयुक्त कार्य किसी समस्या से मुक्ति प्राप्त करन क सर्वोत्तम उपाय ह आर अष्टावक्र दृढ़निश्चयी हैं कि वे अपन संकट से मुक्ति पाकर ही रहग। कवि के विशिष्टाद्वैत दर्शन के अनुसार आत्मा क आदि एवं अन्त और जन्म एव मृत्यु से रहित आर क्षणिक समस्याआ से परे सत्य स्वरुप का वर्णन 5 से ८२ पद्या म प्रस्तुत किया गया ह। तत्पश्चात् अष्टावक्र कहोल से उनके पश्चात्ताप क सम्बन्ध म बताते हुए कहते ह कि व एक विकलाग का जीवन व्यतीत करन क लिए तत्पर एवं प्रतिबद्ध हैं। व अपने पिता स भविष्य म किसी को भी शाप न देन का अनुरोध करते हैं। सग का समापन अष्टावक्र को उन आशापूर्ण भविष्य वाणियों से होता है जिनम वे कहते ह कि उनके पिता का शाप विश्व क विकलागों के लिए एक मगल मय वरदान है क्योंकि अष्टावक्र शीघ्र ही उनक आदर्श सिद्ध होंगे।

संकट–

कवि संकट को अवधारणा प्रस्तुत करत हैं जो मित्रता, कुशलता, बुद्धि एव गुणों के लिए एक परीक्षा कन्द्र के समान है। अष्टावक्र का गभस्थ शरीर एक कछुए क अंडे को भांति हो जाता है। ऋषि कहाल शिशु को दिए अपन शाप पर पश्चात्ताप अनुभव करने लगते ह। ऋषि का पाप जंगल म अकाल क रूप म प्रत्यक्ष दृष्टि गाचर होता है और कहोल क समस्त शिष्य आश्रम छोडकर चले जाते हं। जंगल म पशु आर पक्षी भूख-प्यास से मरन लगत ह। सुजाता कहाल को राजा जनक क यज्ञ म जान आर शास्त्रार्थ म ज्ञानियों को सभा को पराजित कर कुछ धन लान क लिए कहती है। इच्छा न होते हुए भी ए कहोल मिथिला जाते है। किन्तु वरुण का पुत्र बन्दो उन्ह शास्त्रार्थ म हरा देता हैं आर उन्हं वरुण पाश म बाध कर समुद्र क जल म डुबो देते ह। उधर जंगल म सुजाता एक पुत्र का जन्म दती है उद्दालक सुजाता की सहायता क लिए आते ह आर उस कहोल क साथ घटित प्रसग क बारे म बतात हैं। व उस

स इस प्रसग को शिशु से गप्त रखन का कहत ह क्याकि अपने पिता को पराजय का ज्ञान शिशु क व्यतिव क विकास म बाधक बन सकता ह। उद्दालक शिशु का जात कर्म संस्कार सम्पन्न करत हैं शिशु को प्रत्यक व्यक्ति अष्टवक्र आठ वक्र या टढ अगा से यक्त कहकर बलाता ह किन्तु उद्दालक उसका नामकरण अष्टावक्र करते ह जिसक अर्थ यहाँ प्रस्तत ह। अष्टावक्र द्वारा अपन नाना के आश्रम म बड होने क साथ सग का समापन हाता ह।

संकल्प–

सर्ग का प्रारम्भ संकल्प की अवधारणा से होता है। कवि कहते हैं कि सात्विक संकल्प ही सत्य एवं पवित्र संकल्प होते है। अष्टावक्र विकलाग उत्पन्न हुए ह आर उसी समय उद्दालक क यहाँ श्वेतकेतु नामक पुत्र का जन्म हाताह। दानों मामा आर भांजे एक साथ उद्दालक के आश्रम म बड होत हैं। किन्तु उद्दालक अपन सकलांग पुत्र श्वत कतु की अपक्षा विकलाग दाहित्र अष्टावक्र से अधिक प्रेम करते है। अष्टावक्र उद्दालक से ज्ञान प्राप्ति म श्वतकेत समत अन्य समस्त शिष्यों से भी आगे बढकर सवश्रष्ठ सिद्ध होते हैं। अष्टावक्र क दसव जन्मदिवस क अवसर पर उद्दालक एक समारोह का आयोजन करते ह। उद्दालक अष्टावक्र को अपनी गाद म बिठाकर उनका आलिगन करन लगते ह। यह देखकर श्वतकेतु इर्ष्यागरत हा जाते ह आर अष्टावक्र से उनके पिता को गोद से नोच उतर जाने का कहते ह। श्वतकेतु अष्टावक्र के समक्ष रहस्याद्घाटन करते हुए कहते ह कि उद्दालक वस्ततः उनक नाना हैं आर वह उनके वास्तविक पिता के सम्बन्ध म नहो जानत तत्पश्चात श्वतकतु अष्टावक्र को विकलागता का उपहास उडात हुए उनका अपमान करता ह। सुजाता से अपन वास्तविक पिता कहाल क सम्बन्ध म सुनकर अष्टावक्र श्वतकत को उन्ह जागृत करन क लिए धन्यवाद दते ह। अष्टावक्र अपन पिता के बिना उद्दालक क आश्रम म न लौटने का दृढनिश्चय करत है। अष्टावक्र का संकल्प विश्व क समक्ष प्रदर्शित करगा कि विकलाग किसी भी वस्तु का जिसका वे स्वप्न दखत हए प्राप्त करने म समर्थ हैं।

साधना–

कवि स्पष्ट करते ह कि साधना संकल्प को शक्ति एव सफलता का मन्त्र ह। अष्टावक्र सतत चिन्तित रहते ह कि वे किस प्रकार अपन पिता को बन्दी के बन्धन से मक्त कराए व प्रतीति करते हैं कि कहाल क गलत होने के पश्चात भी कहाल को अशाद्धिया को प्रकट कर उनका प्रतिराध करने का उनका अधिकार नहीं था। वे इस निष्कर्ष पर पहुँचत ह कि उनके प्रतिराध को परिणति कहाल को क्रद्ध करन म हुइ जिसके कारण उन्ह यह दर्भाग्य पर्ण श्राप मिलाए क्याकि क्रोध मनष्य का सब से भयंकर शत्र ह। अष्टावक्र वद, उपवदन्याय, मोमासा, धम, आगम एव अन्य ग्रन्थों म प्रवीणता प्राप्त करन का निश्चय करते ह। वे उद्दालक स इन गन्था का अध्ययन करान को प्राथना करते हैं। अत्यन्त ही अल्प समय म अष्टावक्र अपन एकश्रत विलक्षण गुण को सहायता से उद्दालक द्वारा शिक्षित प्रत्यक ग्रन्थ म पाण्डित्य प्राप्त कर लत

हं। समावतन संस्कार क अवसर पर उद्दालक अष्टावक्र को आत्मा क सम्बन्ध म अन्तिम उपदश प्रदान करत हैं आर तदोपरान्त उन्हें अपने पिता को मुक्ति के उद्दश्य स राजा जनक को सभा म जाने का आदश दते ह। उद्दालक पश्चात्ताप स गस्त श्वत केतु का जिन्होने पूर्व म अष्टावक्र का अपमान किया था अष्टावक्र क सहित भेजने का निश्चय करते है। अष्टावक्र यह निश्चय करते हुए कि पिता को मुक्ति ही उनकी सच्चो गुरु दक्षिणा होगी उद्दालक का प्रणाम करते हैं। उद्दालक उन्ह विजयी होने का आशीर्वाद प्रदान करते ह। माता सुजाता भी उन्ह अपना आशीष देते ह। अष्टावक्र अपन मामा श्वत कतु क सहित मिथिला को उद्देश्यपूर्ण यात्रा क लिए निकल पडत ह।

सम्भावना–

सर्ग के प्रथम दस पद्या म सम्भावना अथवा याग्यता का वणन अत्यन्त सजोवता से प्रस्तुत किया गया ह। जब अष्टावक्र मिथिला पहुचत हैं तो उस समय वे आत्म विश्वास से परिपूर्ण हैं। राजा जनक को मिथिला नगरी वदा एव आस्तिक दर्शन की छहों शाखाओं म निष्णात विद्वानों स भरी हुई है। बारह वर्षीय अष्टावक्र एव श्वत कतु को अपन दरबार को आर जा रहे राजा जनक से अनायास भट हो जाती है। जनक अपने सुरक्षाकर्मियों से विकलाग बालक को अपने पथ से हटाने क लिए कहत ह। किन्तुए अष्टावक्र एसा करन क स्थान पर जनक को स्वयं उनके लिए पथ देने क लिए कहत ह क्योंकि व अष्टावक्र धर्मग्रंथो म पारंगत ब्राह्मण ह। अष्टावक्र क तर्क से प्रसन्न होकर जनक उनसे कहत ह कि व मिथिला म किसी भी स्थान पर भ्रमण करने क लिए स्वतन्त्र हं। किन्तु जनक का द्वारपाल अष्टावक्र को राजदरबार म प्रवश नहो करन देता है आर उनसे कहता है कि मात्र ज्ञानो एव बुद्धिमान वृद्ध जन ही जनक क दरबार म प्रवेश करन क अधिकारी ह। किन्तु अष्टावक्र द्वारपाल का अपनो वद्ध की परिभाषा कि मात्र ज्ञान म परिपक्व व्यक्ति ही वृद्धजन कहलान योग्य हैं के द्वारा अवाक कर देतेह। तब द्वारपाल उन्हें याज्ञवल्क्य गागो एव मैत्रेयी जैसे विद्वाना से अलंकृत सभा म प्रवश करने को अनुमति प्रदान कर दता ह। अष्टावक्र बन्दो को शास्त्रार्थ करने क लिए खुली चुनाती देते हैं। किन्तु जनक अष्टावक्र से पहले उन्हें विवाद म सन्तुष्ट करन को कहत ह आर उनके समक्ष छह गूढ प्रश्न प्रस्तुत करते हैं जिनका अष्टावक्र संतोष जनक रूप से समाधान करते ह। तत्पश्चात् जनक उन्हें बन्दी स शास्त्रार्थ करने को कहते ह। बन्दो मन ही मन समझ जाता है कि वह अष्टावक्र से हार जाएगा परन्तु उनसे विवाद करने का निश्चय करता ह। बन्दो अष्टावक्र को परीक्षा लने हतु उनकी विकलागता का उपहास उडान लगता है जिस पर सभा हसने लगती ह। अष्टावक्र बन्दो आर सभा दोनों को कडो फटकार लगाते हैं आर सभा से जान क लिए उद्यत हा उठते ह।

समाधान–

कवि कहते ह कि समाधान प्रत्यक काव्यात्मक रचना का चरम लक्ष्य है और रामायण

का कालातीत रूपक क रूप म प्रयुक्त करते हए व इस अवधारणा का व्याख्यायित करत ह। जनक अष्टावक्र से बन्दो द्वारा किए गए अपमान क लिए क्षमा मांगते ह आर अष्टावक्र शान्त हो जाते ह। व जनक से निष्पक्ष निर्णायक को भूमिका निभान का अनुराध करते हुए बन्दो को पुनः वाग्युद्ध क लिए ललकारते हैं। अष्टावक्र कहते ह कि बन्दो विवाद प्रारम्भ कर आर व उनके प्रश्नों का प्रत्युत्तर दग। विवाद आशुकाव्य क रूप म प्रारम्भ होता ह। बन्दो एव अष्टावक्र एक–एक करक एक से बारह को संख्या पर पद्यरचना आरंभ करत हैं। बन्दो तेरह संख्या क लिए पद्य का मात्र प्रथमार्द्ध रच पाता है किन्तु शष आधा भाग रचन म असफल रहता है। तब अष्टावक्र पूरे पद्य को तुरन्त रचना कर देते ह आर इस प्रकार बन्दो का पराजित कर दते ह। सभा उनकी जय–जयकार करने लगती ह आर जनक उन्हें अपने गुरु के रूप म स्वोकार करते ह। बन्दो अपन रहस्य का उद्घाटन करत हुए कहता है कि वह वरुण का पुत्र है आर उसन अपने पिता क बारह वर्ष से चल रहे वरुण यज्ञ म सहायता के लिए कहाल को अनक अन्य ब्राह्मणा के सहित जल म डुबाकर वरुण लाक भज दिया था। वह अपनी पराजय स्वोकार करता है आर अष्टावक्र क समक्ष समर्पण कर दता है। वयोवृद्ध ऋषि याज्ञवल्क्य भी बालक अष्टावक्र को प्रणाम करते ह आर उन्हें अपना गुरु स्वोकार करत है। बन्दो वापिस समुद्र म चला जाता है जहाँ स कहोल ऋषि लाट आते ह। महर्षि कहाल अपन पुत्र से कहते ह कि व उन्हें मुक्त कराने क लिए सदैव उनके ऋणी रहेगें। अष्टावक्र पिता स प्रतीक्षारत माता क समोप लाट चलन के लिए अनुराध करत ह। घर को आर लाटते समय रास्ते म कहाल अष्टावक्र का गग को पुत्री समगा नदो म स्नान करने को कहते ह। नदी म स्नान करते ही कहाल क तप क बल से अष्टावक्र को विकलांगता समाप्त हो जाती ह। सुजाता अपने पति एव सकलांग पुत्र का देखकर हर्ष से फूली नहीं समाती। अष्टावक्र आजोवन बह्मचारी रहते ह आर एक महान ऋषि बनत हैं। महाकाव्य के अन्त म रामायण क युद्ध क पश्चात महर्षि अष्टावक्र अयोध्या म पर बह्म भगवान श्री सीता रामजो क राजदरबार म पधारते हैं। अष्टावक्र रानी आर राजा को सुन्दर जोड़ी को निहार कर आनन्दित हो उठते ह। सीता अपने पिता क गुरु को प्रणाम करती हैं आर अष्टावक्र उन्ह आशीर्वचन प्रदान करते हैं।

संदर्भगन्थ–

1.अष्टावक्र गोता, 19/1

2.प्रज्ञापुराण कथा मृतम, 1/2/1प्रकाशन युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा

3.प्रज्ञा पुराण कथा मृतम, 1/2/1प्रकाशन युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि,मथुरा

4.श्रीमद्भगवद्गीता, 3/20